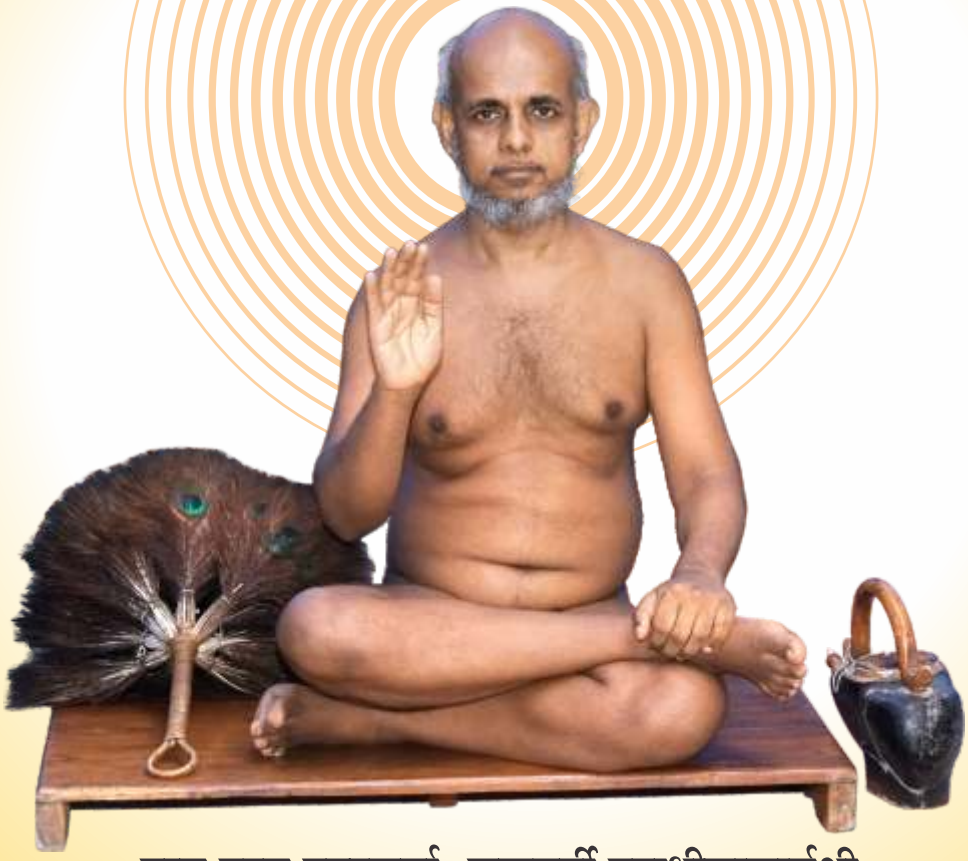

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

# सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

## जिनवाणी-महोत्सव

# सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

# विशद ऋद्धि-सिद्धिप्रदायक पद्मप्रभ विधान

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

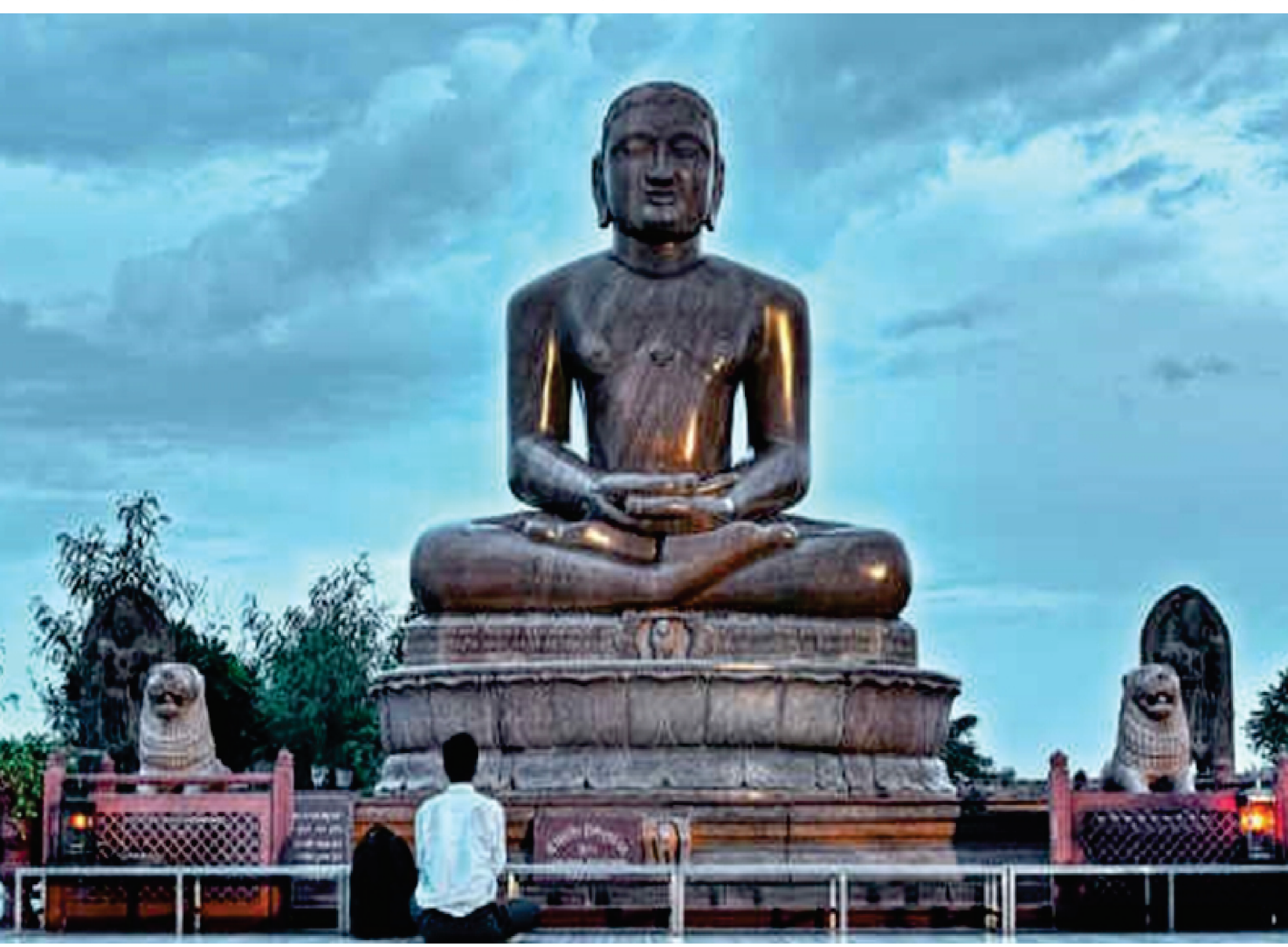

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

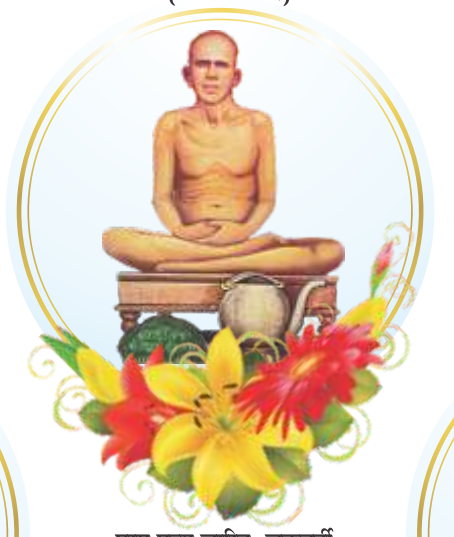

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

।। श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः ।।

# ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक

# श्री पद्मप्रभ विधान

मध्य में-ह्रीं
प्रथम वलय-5
द्वितीय वलय-10
तृतीय वलय-20
चतुर्थ वलय-40
पंचम वलय-80

aM{`Vm

## प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज






कृति – **ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ विधान**

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – **प्रथम-2015** प्रतियाँ -**1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी,**
**क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) , आस्था दीदी, सपना दीदी**

संयोजन – **सोनू दीदी, आरती दीदी ● मो. 9829127533**

प्राप्ति स्थल –
1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. विशद साहित्य केन्द्र-हरीश जैन
जय अरिहंत ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली, नियर लाल बत्ती चौक
गाँधी नगर, दिल्ली मो. 981815971, 9136248971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 31/- रु. मात्र

**एडवोकेट सुधीर जैन-इन्द्रा जैन**
**अभिषेक-रचना, अभिनव-दीपिका जैन**
**जैन मौहल्ला-दौसा**
**मो. 9414050432**

**हेमन्त-पुष्पा सौगानी,**
**हिमांशु-अदिति सौगानी,**
**एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर**
**मो. 9829064506**

**अर्थ सौजन्य**

**राजकुमार-ऊषा कोठ्यारी**
**पुत्र-रचित कोठ्यारी**
**कोठ्यारी भवन, चौड़ा रास्ता,**
**जयपुर मो. 9414048432**

**कमल-राजरानी काला**
**राहुल, कुणाल-स्वाति,**
**निपुण काला (चन्दलाई वाले)**
**1/167, एस.एफ.एस. मानसरोवर**
**जयपुर मो. 9351585185**

**मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट ,** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

**।। श्री पद्मप्रभु देवाय नमः ।।**

अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा के विकास की कहानी कुल 71 वर्ष पुरानी है। बैशाख शुक्ल पंचमी सम्वत् 2001 (सन् 1944) में मूला जाट नाम का लड़का जब अपने बाड़े में नया घर बनाने हेतु नींव खोदने लगा तो उसे अपने फावड़े से किसी पत्थर के टकराने की आवाज आई। उसने धीरे-धीरे खोदना शुरू किया तो उसमें विशाल पद्मासन पदमप्रभु की प्रतिमा भू-गर्भ से प्राप्त हुई। आस-पास के सैकड़ों जैन परिवार वहाँ पहुँचे और भगवान को पास ही एक छोटा जिन मन्दिर बनाकर वहाँ विराजमान किया गया, जहाँ पूजा अर्चना होने लगी।

कुछ ही वर्षों बाद श्री मोहरी लाल गोधा परिवार द्वारा लगभग 17-18 एकड़ जमीन जो मंदिर के लिए दान में दी गई उस पर एक भव्य गोलाकार जैन मंदिर का निर्माण हुआ, जहाँ प्रतिष्ठापूर्वक 1008 पद्मप्रभु भगवान को विराजित किया गया।

पिछले कई वर्षों से मंदिर प्रबंध समितियों द्वारा क्षेत्र का अबाध (निरन्तर) विकास होता रहा है। मंदिर परिसर में यात्रियों के लिए चारों ओर सैकड़ों कमरे बन चुके हैं। ऊपर मंदिर के चारों कोनों पर श्री हंसराज जी जैनाग्रवाल परिवार की ओर से चार भव्य चैत्यालय तथा मंदिर के पीछे की ओर विशाल पद्मप्रभु की खड्गासन प्रतिमा विराजित है।

मंदिर के पीछे श्री हरीशचन्द धाडूका द्वारा एक ए.सी. सभागार बनवाया गया है। इसी प्रकार दक्षिणी पश्चिम कोनों पर सुपार्श्वमती माताजी के नाम से संत भवन तथा पुष्पदंतसागर संत भवन बन चुके हैं।

गत वर्ष अंतर्मना 108 मुनि प्रसन्नसागर जी महाराज का इसी क्षेत्र पर भव्य चातुर्मास भी हुआ है जिसमें तत्कालीन मानद मंत्री श्री ज्ञानचंद झांझरी परिवार ने विशाल रूप से स्थायी सभागार के लिए स्टील पिल्लरों पर डोम बनाकर देने की घोषणा की गई, जो वर्तमान में निर्माणाधीन है।

क्षेत्र श्योदासपुरा-पदमपुरा-रेल्वे स्टेशन से जुड़ा है जो जयपुर-मुम्बई बड़ी रेल्वे लाइन पर अवस्थित है।

मंदिर के विकास में मंदिर के समक्ष एक उत्तंग मानस्तम्भ तथा सामने विशाल द्वार बना हुआ है। लगभग 50 कमरे ए.सी. जो सुसाधन सुविधाओं युक्त हैं, बन चुके हैं। वर्तमान में दूसरी मंजिल पर 10 बैड वाले बड़े कमरे निर्माणाधीन हैं। 31 सदस्यीय प्रबंधकारिणी समिति में वर्तमान में अध्यक्ष श्री सुधीर जैन (एडवोकेट) दौसा, श्री हेमन्त सौगाणी (मानद मंत्री) तथा श्री राजकुमार कोठ्यारी (कोषाध्यक्ष) है।

इसी वर्ष 2015 में गाँव बाड़ा-पदमपुरा को सांसद आदर्श ग्राम योजना में लेकर तीव्र गति से विकास हेतु केन्द्र सरकार प्रयासरत है।

इसी बीच परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य विशदसागर जी महाराज द्वारा अतिशयकारी पद्मप्रभु के दर्शन कर उन्होंने प्रभु के गुणगान में पद्मप्रभ पूजन विधान की रचना की है जिसका कि हम पद्मपुरा क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी समिति के सहयोग से वृहद् संख्या में प्रकाशन कराया जा रहा है। गुरु के इस भक्ति का आधार हम श्रावकों को प्रदान किया इस हेतु हम आचार्यश्री के चरणों में बारम्बार नमन् करते हैं।

**-कमल काला**





# विनय पाठ

**रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज**

**पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।**
**श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।**
**कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।**
**अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।**
**दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।**
**सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।**
**अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।**
**निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।**
**समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।**
**ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।**
**निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।**
**अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।**
**भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।**
**शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।**
**करके तव पद अर्चना, विघन रोग हों नाश।**
**जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।**
**इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।**
**अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।**
**निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।**
**भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।**
**अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।**
**जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।**

**परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।**
**जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।**
**जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।**
**चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।**

*(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)*

## मंगल पाठ

**परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।**
**हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।**
**मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।**
**मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।**
**मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।**
**सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।**
**मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।**
**मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।**
**मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।**
**श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।**
**इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।**
**समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।**
**मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।**
**रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।**

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

*इत्याशीर्वाद :*





## पूजन प्रारम्भ

**ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।**
**णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।**

**ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)**

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

**अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।**
**ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।**
**अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।**
**यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।**
**अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।**
**मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।**
**एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।**
**मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।**
**अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।**
**सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।**
**कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।**
**सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।**

**विघ्नौघा: प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगा:।**
**विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।7 ।।**

*(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)*

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणकअर्घ

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।**

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।**

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

*इत्याशीर्वादः*





# स्वस्ति मंगल

**श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।**
**श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।**
**स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।**
**स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।**
**स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;**
**स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।**
**द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।**
**आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।**
**अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।**
**अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नो; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।**

**ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।**

**श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।**
**श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।**
**श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।**
**श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।**
**श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।**
**श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।**
**श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।**
**श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।**
**श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।**
**श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।**
**श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।**
**श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।**

*(पुष्पांजलि क्षेपण करें)*

**नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघा: स्फुरन्मन: पर्यय शुद्धबोधा: ।**
**दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।1 ।।**

*(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)*

**कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि ।**
**चतुर्विधं बुद्धिबलं दधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।2 ।।**

**संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि ।**
**दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्भहंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।3 ।।**

**प्रज्ञा-प्रधाना: श्रमणा: समृद्धा: प्रत्येकबुद्धा: दशसर्वपूर्वै: ।**
**प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।4 ।।**

**जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वा: ।**
**नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न: ।।5 ।।**

**अणिम्नि दक्षा:कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ता: कृतिनो गरिम्णि ।**
**मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न: ।।6 ।।**

**सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ता: ।**
**तथाऽप्रतिघातगुण प्रधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।7 ।।**

**दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्था: ।**
**ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।8।।**

**आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च ।**
**सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशा:,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो न: ।।9 ।।**

**क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्त: ।**
**अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न: ।।10 ।।**

*(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्) (इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)*





# श्री पद्मप्रभ स्तवन

**श्री पद्म जिनवर, पदम अंकित, पद्मवर्ण सुधानिधम्।**
**नर इन्द्र चन्द्र मुनीन्द्र वन्दित, पद्मनाथ जिनेश्वरम् ।। 1 ।।**
**शिवधेश वेश विकार वर्जित, क्लेशहर मन रंजनम्।**
**मद मोह मान महान दुख निधि, प्रबल मन्मथ भंजनम्।। 2।।**
**प्रभु पाप पंक कलंक वर्जित, सित मयंक गुणागरम,।**
**अघरूप वनदव भस्म कर्त्ता, अक्ष विजयी जिनवरम् ।। 3।।**
**विधि मेघश्याम समूह नाशक, बीत पवन प्रचण्डनम्।**
**भवतापहर सुख साजकर, वरदीप नभ मार्तण्डनम्।। 4।।**
**तुम दिव्य ज्योति दिनेश कोटिक, दिव्यरूप प्रमाहरम्।**
**तुम दिव्यवाणी दिव्यज्ञानी, दिव्यमूर्ति निरंजनम्।। 5।।**
**सत् मग प्रकाशक पाप नाशक, श्रेष्ठ शासक वन्दनम्।**
**फल मुक्ति दायक विश्वनायक, जन सहायक अघहरम्।। 6।।**
**मिथ्यात्व मोह कषाय शंका, वेद अविरत खण्डनम्।**
**श्रद्धान संयम आचरण तप, वीर्य सद्गुण मण्डनम् ।। 7।।**
**अघ कर्म हरता जगत् कर्त्ता, धर्म धारी मंगलम्।**
**सर्वज्ञ परमेष्ठी सनातन, सरल नित्य निरंजनम्।। 8।।**
**अज्ञान मूढ़ अनायतन तज, कर्म दाह विनाशनम्।**
**सद्ज्ञान ध्यान महान् वन्दन, आत्मधर्म प्रकाशनम्।। 9।।**
**कल-मल विमोचन ज्ञान लोचन, दरिद्र मोचन ईश्वरम्।**
**कह प्रेमपूर्वक दास भगवत्, नित्य वन्दे जिनवरम् ।। 10।।**

*पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।*

**आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य**

**प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।**
**महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।**
**विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।**
**पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।**

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# बाड़ा पदमपुरा के अतिशयकारी 1008 श्री पद्मप्रभु भगवान की पूजा

## *स्थापना*

**जिनका यश गूँज रहा पावन, धरती से गगन सितारों तक।**
**जिनकी पूजा अर्चा होती, नर लोक स्वर्ग के द्वारों तक।।**
**जो प्रकट हुए हैं बाड़ा में, बाड़ा को चमन बनाया है।**
**इस भारत भू का हर प्राणी, जिनके चरणों में आया है।।**
**जिनके चरणों में भूत-प्रेत, लोगों के संकट कट जाते।**
**श्री पद्म प्रभु का आह्वानन्, करके चरणों में सिर नाते।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

## *(चाल छंद)*

**यह कलश में जल भर लाए, त्रय रोग नशाने आए।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**केशर की गंध बनाए, भव ताप नशाने आए।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**यह पुष्प चढ़ाने लाए, मम् काम रोग नश जाए।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।**





ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**चरु चढ़ा रहे मनहारी, है क्षुधारोग परिहारी।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीपक ये ज्ञान प्रकाशी, प्रभु चढ़ा रहे तम नाशी।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों की फौज हटाएँ।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, प्रभु मोक्ष महाफल पाएँ।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है अनर्घ्य पद दायी।**
**हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।**

ॐ ह्रीं बाड़ा ग्राम स्थित अतिशयकारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- शांती धारा जो करें, वे पावें सद्ज्ञान।**
**शिव पद के राही बनें, करें आत्म कल्याण।।**

।। शान्तये शांतिधारा।।

**दोहा- पुष्प चढ़ाते आज हम, पुष्पित मंगलकार।**
**अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।**

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

## पंचकल्याणक के अर्घ्य

**गर्भ चिह्न माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।**
**माघ कृष्ण षष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।**

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि पाए, सुर–नर इन्द्र सभी हर्षाए।**
**जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।**

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक वदि तेरस शुभकारी, संयमधार हुए अनगारी।**
**मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।**

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।**
**धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुण शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।**
**अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्ण चतुर्थ्या मोक्षकल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## भूमि स्थित समय का अर्घ्य

**पाँचें सुदी वैशाख में, प्रकटे पदम जिनेश।**
**जिनकी अर्चा हम विशद, करते यहाँ विशेष।।**

ॐ ह्रीं वैशाख सुदी पञ्चम्यां बाडा पदमपुरा स्थाने प्रकद रूपाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## चरण चिह्न का अर्घ्य

**प्रगट हुए पदम प्रभु, भू में जिस स्थान।**
**चरण चिह्न की वन्दना, करते महति महान।।**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





## जयमाला

**दोहा– पद्मासन पद में पद्म, पद्मप्रभु भगवान।**
**जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान।।**

*(रेखता छंद)*

**चरण में भक्ती से शत इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।**
**कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश।।1।।**
**अनुत्तर वैजयन्त से आप, जये कौशाम्बी नगरी आन।**
**धरण नृप रही सुसीमा माता, गर्भ में कीन्हें आप प्रयाण।।2।।**
**दाहिने पग में कमल का चिह्न, इन्द्र ने देख लिया शुभ नाम।**
**कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हें सभी प्रणाम।।3।।**
**जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।**
**ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष।।4।।**
**स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।**
**रचाएँ समवशरण तव देव, रहा विधि का कुछ यही विधान।।5।।**
**पूर्णकर आयु कर्म विशेष, किए सब कर्मों का प्रभु नाश।**
**समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हें आप निवास।।6।।**
**ग्राम बाड़ा में मूला जाट, नींव घर की खोदी मनहार।**
**भूमि से प्रगटे पद्म जिनेश, हुई तव भारी जय–जयकार।।7।।**
**शरण में आए जो भी भक्त, हुई उन सबकी पूरी आस।**
**वन्दना करते चरणों नाथ, पूर्ण हो मेरी भी अरदास।।8।।**

**दोहा– प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।**
**गुण गाते निज भाव से, मिल मुक्ती का यान।।**

ॐ ह्रीं श्रीं बाड़ा ग्रामे मनोज्ञ मनवांछित फलप्रदाता श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– पद्मप्रभु भगवान हैं, वाञ्छित फल दातार।**
**वन्दन करते भाव से, पद में बारम्बार।।**

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

# श्री पद्मप्रभ जिन पूजन

*स्थापना*

**हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !**
**हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।**
**हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।**
**हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।**
**हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।**
**हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

*(वीर छन्द)*

**निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय ।**
**जन्म जरा मृतु दुख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।1 ।।**

ॐ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय ।**
**भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।2 ।।**

ॐ भ्रां भीं भ्रूं भ्रौं भ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।





**प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय ।**
**अक्षय पद को पाने हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।3 ।।**

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सुन्दर सुरभित और मनोहर, भाँति-भाँति के पुष्प मँगाय ।**
**कामबाण विध्वंस करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।4 ।।**

ॐ रां रीं रूं रौ रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वशंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

**घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय ।**
**क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।5 ।।**

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय ।**
**मोह तिमिर के नाशन हेतू, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।6 ।।**

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दश प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय ।**
**अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**

**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।7।।**

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

**ऐला केला और सुपाड़ी, आम अनार श्री फल लाय ।**
**पाने हेतू मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।8।।**

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय ।**
**धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय ।।**
**सूर्य अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय ।**
**हे करुणाकर ! भव दुखहर्ता, चरण पूजते मन वच काय ।।9।।**

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा– **पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस ।**
**कल्मष होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास ।।**
**तीन योग से प्रभू पद, वन्दन करूँ त्रिकाल ।**
**पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल ।।**

**(छन्द – तामरस)**

**जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़– जोड़ द्वय हाथ नमस्ते ।**
**ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते ।।**
**भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर–नर कृत पद सेव नमस्ते ।**
**पद्म प्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते ।।**





**आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते ।**
**पद झुकते शत इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते ।।**
**भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते ।**
**धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय–जय गुण गम्भीर नमस्ते ।।**
**भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन–जन के आधार नमस्ते ।**
**रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते ।।**
**जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते ।**
**मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, काम जयी महावीर नमस्ते ।।**
**विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते ।**
**सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते ।।**
**वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते ।**
**वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते ।।**

(छंद घत्ता)

**जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु ।**
**जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु ।।**

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ ।**
**रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ ! ।।**

*शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

## प्रथम वलयः

दोहा– **कल्याणक शुभ पांच के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य ।**
**पुष्पांजलि क्षेपण करें, पाने विशद अनर्घ्य ।।**

*(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि ।)*

पहले वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करना है।

## *स्थापना*

**हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !**
**हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।**
**हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।**
**हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।**
**हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।**
**हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

## पंचकल्याणक के अर्घ्य

**माघ कृष्ण षष्ठी के दिन प्रभु माता के उर में आए ।**
**उपरिम ग्रैवेयक से चय कीन्हा, पृथ्वी पर मंगल छाए ।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक माघ कृष्ण षष्ठीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को, भू पर पावन सुमन खिला ।**
**भूले भटके नर नारी को, शुभम् एक आधार मिला ।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को, प्रभु के मन वैराग्य जगा ।**
**दीक्षा लेकर निज आतम के, चिंतन मनन में चित्त लगा ।।3 ।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





**चैत शुक्ल पूनम को प्रभु ने, केवलज्ञान जगाया था ।**
**देवों ने जय जयकारों से, सारा भू-भाग गुंजाया था ।।4 ।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी को प्रभु, वसु कर्मों का हनन किए ।**
**सम्मेद शिखर की मोहन कूट से, मोक्ष महल को वरण किए ।।5।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी दिने मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा- **कल्याणक शुभ पाँच, पद्म प्रभु जी पाए हैं ।**
**हुए धर्म के नाथ, अर्घ्य चढ़ा पूज करूँ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पंचकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

*शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)*

## द्वितिय वलयः

**क्षमा आदि दश धर्म का, धरूँ हृदय में भाव ।**
**पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाऊँ निज स्वभाव ।।**

*(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।)* यहाँ दूसरे वलय पर पुष्प क्षेपण करें।

## *स्थापना*

**हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !**
**हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।**
**हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।**
**हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।**
**हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।**
**हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

## दश धर्म के अर्घ्य

*(गीता छन्द)*

**क्रोध को मैं जीत पाऊँ, कौन सा उद्यम करूँ ।**
**उत्तम क्षमा का भाव प्रभुवर, निज हृदय में मैं धरूँ ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**उत्तम सुमार्दव धर्म पाएँ, मान का मर्दन करें ।**
**विनय गुण को प्राप्त करके, ज्ञान का अर्जन करें ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**उत्तम सुआर्जव धर्म पाएँ, छल कपट का नाश हो ।**
**मन वचन अरु काय से, जिन धर्म पर विश्वास हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।3।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





**लोभ का परिहार करके, हृदय में सन्तोष हो ।**
**शौच उत्तम धर्म पाकर, पूर्णतः निर्दोष हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।4।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम शौच धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सत् समय में रमण होवे, असत् का परिहार हो ।**
**धर्म उत्तम सत्य पाएँ, मन वचन अविकार हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।5।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम सत्य धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**त्रस-स्थावर की सुरक्षा, इन्द्रियों पर विजय हो ।**
**प्राप्त हो उत्तम सुसंयम, धर्म में मन विलय हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।6।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम संयम धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**बाह्य अभ्यन्तर सुतप से, कर्म का संहार हो ।**
**धर्म तप उत्तम जो पाएँ, आत्म का उद्धार हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।7।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम तप धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**त्याग कर चौबिस परिग्रह, ध्यान आतम का लगे ।**
**त्याग उत्तम धर्म पाएँ, ज्ञान की ज्योती जगे ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।8।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम त्याग धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**राग न हो द्वेष न हो, मोह न किंचित् रहे ।**
**उत्तम आकिंचन्य धर्म पाकर, ज्ञान की गंगा बहे ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।9।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम आकिंचन्य धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

**काम की ना नाम की ना, धाम की ना आश हो ।**
**ब्रह्मचर्य उत्तम सु पाकर, आत्मा में वास हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।10।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

**उत्तम क्षमादिक धर्म पाकर, कर्म वसु की हानि हो ।**
**भव के भ्रमण का अन्त हो, अरु प्राप्त केवल ज्ञान हो ।।**
**जल फलादिक अर्घ्य लेकर, प्रभू पद अर्चन करूँ ।**
**पद्म प्रभु के पाद पंकज, में विशद वन्दन करूँ ।।11।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उत्तम क्षमा मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य आदि दश धर्म सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

*शान्तये शांतिधारा (पुष्पांजलिं क्षिपामि।)*





## तृतिय वलयः

दोहा– **जीवों में त्रय लोक के, दोष अनन्तानन्त ।**
**कर्म घातिया नाशकर, पाप किए प्रभु अन्त ।।**

*(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि)* तीसरे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।

### *स्थापना*

**हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !**
**हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।**
**हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।**
**हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।**
**हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।**
**हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव– भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

## अष्टादश दोष मिथ्यात्व वेदरहित जिन

### *(रोला छन्द)*

**क्षुधा व्याधि में घात, जग जीवों का होवे ।**
**संज्ञा होय आहार, चेतन गुण को खोवे।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षुधा रोग विनाशक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**तृषा वेदना व्याप्त, जग जीवों के होवे ।**
**तन में पीड़ा होय, मन की शांती खोवे ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षुधा रोग विनाशक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लगे जीव के साथ, सात महाभयभारी ।**
**संयम तप से नाश, कर्म कर हों अविकारी ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।3।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सप्त भयरोग विनाशक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिन्ता चिता समान, जिसको भी लग जावे ।**
**करती जीवन हान,जीवित उसे जलावे ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।4।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चिन्ता रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जर्जर करती देह, जरा जीव की आकर ।**
**शिथिल करे सब अंग, वृद्ध अवस्था पाकर ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।5।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जरा रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चउ प्राणों के साथ, प्राणी जीवन पावे।**
**प्राण छूटते साथ, उनका मरण कहावे ।।**





**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।6।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मरण रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जले राग की आग, सारे सुगुण जलावे ।**
**हो प्रभु से अनुराग, जग से मुक्ती पावे ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।7।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक राग रोग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मोह महाबलवान, कोई जीत न पावे ।**
**जीते जो बलवान, महावीर कहलावे ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।8।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मोह दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**भरे करोड़ों रोग, इस प्राणी के तन में ।**
**पाते हैं बहु क्लेष, स्वयं अपने जीवन में ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।9।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक रोग दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**तन से बहकर श्वेद, करे तन मन को आकुल ।**
**पावें केवलज्ञान, श्वेद बिन रहे निराकुल ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।10।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्वेद दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**श्रम करके जग जीव, निज की शांती खोवे ।**
**करे कर्म का नाश, कभी फिर खेद न होवे ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।11।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक खेद दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कहे महामद आठ, मान जग में उपजावें ।**
**करें मान की हान, जीव वह मुक्ती पावें ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।12।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मद दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रही दोष से प्रीत, उपजती पर प्राणी से ।**
**जानो इसका दोष, बन्धु तुम जिनवाणी से ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।13।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक रति दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कोतूहल को देख, करें जो विस्मय भारी ।**
**स्थिर न हो ध्यान, रहें ना वे अनगारी ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।14।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक विस्मय दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा ।





**निद्रा के वश जीव, स्वयं को जान न पावें।**
**निद्रादिक का नाश, किए निज में रम जावें।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।15।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक निद्रा दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जन्म अनन्तों बार पाय, पाए दुख भारी ।**
**कर्म नाशकर जीव, हो जाते अविकारी ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।16।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जन्म दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अरति दोष के साथ, होता मन अतिभारी ।**
**मन में हो संताप, दुखी होय नर नारी ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।17।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अरति दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**महाक्रोध की अग्नी, मन में द्वेष जगावे ।**
**तज के ईर्ष्या द्वेष, चेतन में रम जावे ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।18।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक द्वेष दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**करता है मिथ्या घात, सम्यक् दर्शन का ।**
**भ्रमण अनन्तानन्त, काल हो जग में जन का ।।**

**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।19।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मिथ्यात्व दोष रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**स्त्री आदिक वेद जग में, भ्रमण करावें ।**
**करके वेद विनाश, मोक्ष की पदवी पावें ।।**
**विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नसावें ।**
**पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष महाफल पावें ।।20।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक स्त्री वेद दोष आदिक रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

*(शंभु छन्द)*

**यह दोष अठारह वेद, तथा मिथ्यात्व जगत भटकाते हैं ।**
**संसार में रहते जो प्राणी, इससे वह न बच पाते हैं ।।**
**जो इनको जीते वह जिनेन्द्र, शत इन्द्रों से पूजे जाते हैं ।**
**हम जीत सकें इन दोषों को, प्रभु चरणों शीश झुकाते हैं ।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अठारह दोष, मिथ्यात्व, स्त्री आदि लिंग रहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

*शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

## चतुर्थ वलयः (10 जन्म के अतिशय)

दोहा– **चौंतिस अतिशय पाए हैं, अनन्त चतुष्टय साथ ।**
**संयम–पा अर्हत् हुए, चरण झुकाऊँ माथ ।।**

*(अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।)* चौथे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।

### *स्थापना*

**हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !**
**हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।**





**हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।**
**हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।**
**हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।**
**हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव– भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

## (चौंतिश अतिशय अनन्त चतुष्टय संयम के अर्घ्य)

**स्वेद रहित तन पाते जिनवर, ये अतिशय हैं सुखकारी ।**
**भक्त वन्दना करें भाव से, जीवन हो मंगल कारी ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक स्वेद रहित शोभायमान सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**गर्भ जन्म को पाते फिर भी, श्री जिन मल से रहित कहे ।**
**किञ्चित् मल अरु मूत्र नहीं है, पूर्ण रूप से अमल रहे ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक निर्मलत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**स्वेत रूधिर होता है तन का, वात्सल्य दर्शाता है ।**
**दर्शन करके श्री जिनवर का, सबका मन हर्षाता है ।।**

**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।3।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गौक्षीर वत् स्वेत रूधिरत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रभु का तन सुन्दर सुडौल है, होता है अतिशय कारी ।**
**शुभ परमाणू से निर्मित जो, समचतुस्र विस्मय कारी ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।4।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक समचतुरस्र संस्थान सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**वज्र वृषभ नाराच संहनन, जन्म समय से पाते हैं ।**
**अतिशय शक्ती पाने वाले, श्री जिनेन्द्र कहलाते हैं ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।5।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**तन की सुन्दरता है इतनी, सारे रूप लजाते हैं ।**
**काम देव भी जिनके आगे, अति फीके पड़ जाते हैं ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।6।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अतिशय रूप सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रभु जन्म के अतिशय में इक, यह भी अतिशय आता है ।**
**अति सुगन्ध मय तन होता है, तीन लोक महकाता है ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।7।।**





ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सौगन्ध शरीर सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सहस आठ लक्षण प्रभु तन में, अतिशय शोभा पाते हैं।**
**सहस्र नाम के द्वारा भविजन, उनकी महिमा गाते हैं ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।8।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अष्टोतर सहस्र शुभ लक्षण शरीर धारक सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अप्रमित वीर्य को धार रहे बल, होता अतिशय कारी है ।**
**इनके आगे सुर चक्रवर्ति अरु, इन्द्र की शक्ति हारी है ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।9।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अप्रतिमवीर्य सहित सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रभु की हित मित अरु प्रियवाणी, सबको सन्तोष दिलाती है ।**
**शत इन्द्र चरण आ झुकते हैं, उन सबका मन हर्षाती है ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।10।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्रियहित वादित्व सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## 10 केवलज्ञान कृत अतिशय

**जब केवल ज्ञान प्रकट होता, तो अतिशय नया दिखाता है ।**
**करके सुभिक्ष पृथ्वी तल को, सौ योजन तक महकाता है ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।11।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गव्यूतिशत् चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**ज्यों सूर्य उदय होता नभ में, त्यों प्रभु अधर हो जाते हैं ।**
**बस पाँच हजार धनुष ऊपर, वह गगन गमन को पाते हैं ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।12।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आकाशगमनत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु दया भाव के कोष रहे, अदया का नाम निशान नहीं ।**
**जो चरण शरण को पा जाते, उनको नाहिं होता खेद कहीं ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।13।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह केवलज्ञान का अतिशय है, प्रभु कवलाहार नहीं करते ।**
**फिर भी तन वदन प्रशस्त रहे, जीवों के खेद सभी हरते ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।14।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कवलाहार सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जब केवलज्ञान प्रकट होता, तब यह अतिशय हो जाता है ।**
**फिर चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।15।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ समोशरण में श्री जिन का, मुख उत्तर पूर्व में रहता है ।**
**दिखता चारों हैं ओर विशद, शुभ जैनागम यह कहता है ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।16।।**





ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चतुर्मुखत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रभु सब विद्या के ईश्वर हैं, अरु सर्व कला कौशल धारी ।**
**जन-जन पर करुणा करते हैं, प्रभु सर्व लोक में उपकारी ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।17।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वविद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**है परमौदारिक तन प्रभु का, न पड़ती है उसकी छाया ।**
**जो पुद्गल से ही बना हुआ, यह प्रभु की है कैसी माया ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।18।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक छायारहित सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पलकें न कभी झपकती हैं, प्रभु नाशा पर दृष्टी रखते ।**
**बिन देखे द्रव्य चराचर के, वह स्वयं ज्ञान से सब लखते ।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।19।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अक्षस्पन्द रहित सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**ये महिमा अतिशय शाली है, प्रभु केवल ज्ञान जगाते हैं।**
**नहिं बढ़े केश नख किंचित भी, ज्यों के त्यों ही रह जाते हैं।।**
**पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।20।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक समान नखकेषत्व सहजातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## चौदह देवकृत अतिशय

*(चौबोला छंद)*

**तीर्थंकर की दिव्य देशना, सर्वार्द्ध मागधी भाषा में।**
**है चमत्कार देवों का ये, समझो सुरकृत परिभाषा में ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।21।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वार्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिस ओर प्रभु के चरण पड़ें, जन-जन में मैत्री भाव रहे ।**
**सब बैर विरोध मिटे मन का, करुणा का उर में स्रोत बहे ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।22।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्व जीवमैत्री भाव देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जिनवर का गमन जहाँ होता, इक साथ फूल खिल जाते हैं ।**
**सौरभ सुगन्ध के द्वारा वह, अवनी तल को महकाते हैं ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।23।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वर्तुफलादि शोभित तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**प्रभु चरण पड़ें जिस वसुधा पर, भू कंचनवत् हो जाती है ।**
**ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते, वह दर्पणवत् होती जाती है ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।24।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आदर्षतलप्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





**अतिशय यह देवोंकृत होता, सुरभित वायू अनुकूल रहे ।**
**सब विषम व्याधि का नाश करे, शुभ मंद सुगन्ध समीर बहे ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।25।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आनन्द सरोवर लहराए, मन में उत्साह उमंग भरे ।**
**प्रभु का दर्पण सारे जग में, जन जन का कल्मष दूर करे ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।26।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वजन परमानन्दत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वायूकुमार सुर आकर के, अतिशय ये खूब दिखाते हैं ।**
**धूली कंटक से रहित भूमि, करके प्रभु गमन कराते हैं ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।27।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वायुकुमारोपषमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुर मेघकुमार सुवृष्टि करें, शुभ गंधोदक वर्षाते हैं ।**
**मेघों कृत बही सुगन्धी से, जन-जन के मन हर्षाते हैं ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।28।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु गगन गमन जब करते हैं, सुर स्वर्ण कमल रचते जाते ।**
**पन्द्रह का वर्ग कमल रचना, यह जैनागम में बतलाते ।।**

**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।29।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चरणकमल तल रचित स्वर्णकमल देवोपुनीतातिशय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सब ऋतुओं के फल फूल खिले, जहँ जिनवर के शुभ चरण पड़ें ।**
**फल से तरु डाली झुक जाती, खेतों में धान्य के पौध बढ़ें ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।30।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक फलभारि नम्रषालि देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सर्व दिशाएँ निर्मल होतीं, शरद काल सम हो आकाश ।**
**भक्ति भाव से करें अर्चना, हो जाती है पूरी आस ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।31।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आओ आओ भक्ती कर लो, सबका करते हैं आह्वान ।**
**भक्ती करते स्वयं भाव से, चरणों में करते वन्दन ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।32।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक एतैतेति चतुर्णिकायामर परापराह्वान देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्मचक्र मस्तक पर लेकर, सर्वाण्हयक्ष आगे चलता ।**
**अतिशय दिखलाता यक्ष स्वयं, भविजन को बहु आनंद मिलता।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।33।।**





ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक धर्म चक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**छत्र चँवर दर्पण ध्वज ठोना, पंखा झारी कलश महान् ।**
**मंगल द्रव्य अष्ट ले आते, स्वर्ग लोक से देव प्रधान ।।**
**शुभ पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं ।**
**सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र नर, चरणों शीश झुकाते हैं ।।34।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अष्टमंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## अनन्त चतुष्टय एवं संयम के अर्घ्य *(नरेन्द्र छंद)*

**तीन लोक के द्रव्य चराचर, एक साथ ही जान रहे ।**
**गुण पर्याय सहित द्रव्यों को, समीचीन पहिचान रहे ।।**
**ज्ञान अनन्तानन्त प्राप्त कर, केवलज्ञानी कहलाये ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आये ।।35।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तज्ञान संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कर्म दर्शनावरणी नाषा, केवल दर्शन प्रकटाया ।**
**दिव्य देशना द्वारा जग में, सर्व लोक को दर्शाया ।।**
**पाए दर्श अनन्त श्री जिन, ज्ञाता दृष्टा कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।36।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तदर्शन संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मोहनीय कर्मों को नाशा, सुख अनन्त को पाया है ।**
**नश्वर सुख को त्याग प्रभु ने, शाश्वत सुख उपजाया है ।।**
**पाए सौरभ गुण अनन्त, जिन पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।37।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तसुख संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कर्म नाशकर अन्तराय का, आतम शौर्य जगाया है ।**
**आतम की शक्ती खोई थी, उसको भी प्रभु ने पाया है ।।**
**पाए वीर्य अनन्त श्री जिन, पद्मप्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।38।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अनन्तवीर्य संयुक्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**स्पर्शन रसना घ्राण चक्षु, अरु श्रोतृ इन्द्रिय मन को जीत ।**
**इन्द्रिय संयम को धारण कर, पाया सौख्य इन्द्रियातीत ।।**
**वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि बलि जाएँ ।।39।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक इन्द्रियसंयम प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**पृथ्वी जल अग्नी वायु अरु, त्रस जीवों पर दया विचार ।**
**प्राणी संयम को धारण कर, रत्नत्रय धारे अनगार ।।**
**वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ति हेतु, चरणों में बलि बलि जाएँ ।।40।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्राणीसंयम प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## पूर्णार्घ्यं

**चौंतिस अतिशय और चतुष्टय, ज्ञान अनंतादिक पाए ।**
**संयम से सर्वज्ञ हुए प्रभु , तव पद में हम सिर नाए ।।**
**वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ति हेतु , हम चरणों में बलि बलि जाएँ ।।41।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय महाअर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

*शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)*





## पंचम वलयः

सोरठा– **चौंसठ ऋद्धि समूह, गुण के आश्रय जानिये ।**
**पुष्पांजलि अर्पण करें, गुण को पाने गुणी जन ।।**

*(अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।)* पाँचवे वलय के ऊपर पुष्प क्षेपण करना है।

## *स्थापना*

**हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !**
**हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर ।।**
**हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन ।**
**हे सूर्य अरिष्ट ग्रह नाशक जिन, करते हैं उर में आह्वानन् ।।**
**हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ ।**
**हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ ।।**

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त,सर्व मंगलकारी ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण ऋद्धि–सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव– भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

## चौंसठ ऋद्धी के अर्घ्य *(रोला छंद)*

**बुद्धि ऋद्धि के भेद, अठारह भाई माने ।**
**अवधिज्ञान से अणू, आदि स्कन्ध सुजाने ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अवधिबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मनः पर्यय हो ज्ञान, और के मन की जानें ।**
**अतिशय सूक्ष्म मूर्त, द्रव्यों को यति पहिचानें ।।**

**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।2।।**

ॐ ह्रींसर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मनःपर्ययबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**लोकालोक प्रकाशी, केवल ज्ञानी माने ।**
**त्रैकालिक वस्तु क्षण में, प्रत्यक्ष सुजाने ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।3।।**

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक केवलबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**विविध शब्द के अर्थ, अनन्तों भाई पावें ।**
**बीज भूत पद सब, श्रुत के आधार कहावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।4।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक बीज बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**शब्द रूप बीजों को, मति से मुनिवर जानें ।**
**कोष्ठ बुद्धि से पृथक्, पृथक् उनको पहिचानें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।5।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कोष्ठबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**इक पद सुन तिय पद के, अर्थ मुनीश्वर जाने ।**
**पादानुसारिणी बुद्धी, ऋद्धीधर पहिचाने ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।6।।**





ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**युगपद बहु शब्दों को, सुन धारण हो जावे ।**
**पृथक-पृथक संभिन्न, श्रोतृत्व बुद्धि से गावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।7।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक संभिन्नश्रोतृत्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**स्पर्शन इन्द्रिय से, नौ योजन की भाई ।**
**दूर स्पर्श की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।8।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरस्पर्षनबुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रसना इन्द्रिय द्वारा, नौ योजन की भाई ।**
**दूर स्पर्श की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।9।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरास्वादन ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**घ्राणेन्द्रिय के द्वारा, नौ यौजन की भाई ।**
**गंध ग्रहण की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।10।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरगन्ध ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दो सौ सैंतालीस हजार, त्रेसठ योजन भाई ।**
**दूरदर्शिता की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।11।।**

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरावलोकन ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**श्रोतेन्द्रिय से द्वादश योजन की सुन भाई ।**
**दूर श्रवण की शक्ती, ऋद्धीधर मुनि पाई ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।12।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दूरश्रवण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रोहिणी आदिक सब, विद्यायें आज्ञा माँगें।**
**दशम पूर्व ऋद्धी धारी, साधू के आगे ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।13।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दशमपूर्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**द्रव्यभाव श्रुत के ज्ञाता, श्रुत धारी गाये ।**
**ग्यारह अंग पूर्व चौदह, का ज्ञान जगाये ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।14।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक ग्यारह अंग चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अंग भौम आदिक लक्षण का, सुफल बताए ।**
**मुनि अष्टांग महा निमित्त, ऋद्धीधर गाए ।।**





**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।15।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जो ऋषि अध्यन बिना, पूर्वधारी हो जावें।**
**चार भेद युत प्रज्ञा श्रमण, ऋद्धी को पावें।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।16।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**गुरु उपदेश बिना, तप बल से ऋद्धी पावें ।**
**वह प्रत्येक बुद्धि, ऋद्धी धारक हो जावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।17।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दुरमति परमत वादी जग में, चउ दिश छाए ।**
**वाद कुशल मुनि के, द्वारा वह सभी हराए ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।18।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वादित्य बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अणू बराबर छिद्र में जो, ऋषिवर घुस जावें ।**
**अणिमा ऋद्धीवान, चक्री का कटक समावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।19।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अणिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मेरु बराबर देह सुतप, बल से जो बनावें ।**
**महिमा ऋद्धीवान मुनी, यह ऋद्धि पावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।20।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक महिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आक तूल सम हल्की, अपनी देह बनावें।**
**लघिमा ऋद्धि विशिष्ट, मुनी यह ऋद्धि पावें।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।21।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक लघिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वज्र समान भार युत, भारी देह बनावें ।**
**गरिमा ऋद्धीवान, मुनी ये अतिशय पावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।22।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गरिमा ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**खड़े जमीं पर सूर्य, चन्द्रमा को छू लेवें ।**
**मेरु शिखर को छुएँ, प्राप्त ऋद्धी को सेवें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।23।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्राप्ति ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





**भू में जल, जल में भू, सम मुनि गमन करन्ते ।**
**प्राकम्प विक्रिया ऋद्धी, जो मुनिराज धरन्ते ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।24।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक प्राकम्प ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग में होय प्रभुत्व, यही ईशत्व कहावें ।**
**यशः कीर्ति को पाय, जगत अतिशय ये पावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।25।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक ईशत्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दृष्टी पड़ते लोग सभी, वश में हो जाते ।**
**ऋद्धी पाय वषित्व, ऋषी के दर्शन पाते ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।26।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वशित्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शैल शिला अरु तरुवर, मधि से पार करन्ते ।**
**अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धि, मुनिराज धरन्ते ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।27।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अप्रतिघात ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिस ऋद्धी से ऋषी, स्वयं अदृश्य हो जावें ।**
**ऋद्धी अन्तर्धान मुनी, तप बल से पावें ।।**

**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।28।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अन्तर्धान ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**एक साथ कई रूप, स्वयं ऋषिराज बनावें ।**
**कामरूप ऋद्धी से, मुनि यह शक्ती पावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।29।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक काम रूपित्व ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**गमनागमन पद्मासन से, व्युत्सर्ग करन्ते ।**
**नभ चारण ऋद्धी तप से, मुनिराज धरन्ते ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।30।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक नभ चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जल चारण ऋद्धीधर, जल के ऊपर जावें ।**
**जल जीवों का घात, नहीं उनसे हो पावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।31।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जल चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**चउ अंगुल ऊपर भू से ऋषि, अधर चलन्ते ।**
**जंघा चारण ऋद्धी श्री, ऋषिराज धरन्ते ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।32।।**





ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जंघा चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**पत्र पुष्प फल के ऊपर, यह ऋद्धीधारी ।**
**नहीं जीव को पीड़ा हो, मुनि चलें सुखारी ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।33।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पुष्प चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अग्नि शिखा पर चलें, जीव बाधा नहिं पावें ।**
**अग्नि धूम चारण ऋद्धिधर, बढ़ते जावें ।।**
**वीतरागता धार सुतप से, ऋद्धी पाए ।**
**श्री जिन के गुण पाने, चरणों शीश झुकाए ।।34।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अग्नि चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

*(राधेश्याम छन्द)*

**जलधारा जो मेघ बरसती, मुनि उस पर चलते जावें ।**
**मेघ चारणी ऋद्धीधर से, जल जन्तु नहिं दुख पावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।35।।**

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मेघचारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मकड़ी के तन्तु पर मुनिवर, सहज कदम रखते जावें ।**
**तन्तू चारण ऋद्धीधर मुनि, से बाधाएँ न आवें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।36।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक तन्तु चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सूर्य चन्द्र तारा आदिक की, किरणों का ले आलम्बन ।**
**ज्योतिष चारण ऋद्धीधारी, कई योजन तक करें गमन ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।37।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक ज्योतिष चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**वायू की पंक्ति का मुनिवर, लेकर चलते आलम्बन ।**
**वायू चारण ऋद्धीधारी, कई योजन तक करे गमन ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।38।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वायु चारण ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**तप ऋद्धी के सात भेद में, प्रथम उग्र तप कहलाए ।**
**दीक्षा से उपवास निरन्तर, मरणान्त काल बढ़ता जाए ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।39।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**बेला आदि उपवास किए फिर, दीप्त तपः ऋद्धी पावें ।**
**बिन आहार बढ़े बल तेजरू, नहीं भूख व्याधी आवे ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।40।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दीप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**उग्र तपो तप ऋद्धिधारी, आहार ग्रहण तो करते हैं ।**
**नहीं होय नीहार धातु मल, मूत्र आदि सब हरते हैं ।।**





**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।41।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक उग्रतपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**महातपो तप ऋद्धिधारी, अणिमा आदि ऋद्धी पाएँ ।**
**सिंह निष्क्रीडन आदी व्रत जो, बिना खेद करते जाएँ ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।42।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक महातपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अनशन आदिक द्वादश विधि तप, उग्र–उग्र करते जावें ।**
**घोर तपो तप ऋद्धिधारी, कष्ट सहज सहते जावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।43।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक घोरतपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**घोर पराक्रम ऋद्धी द्वारा, अतिशय शक्ती पाते हैं ।**
**तीन लोक से रण की शक्ती, ऋषिवर स्वयं जगाते हैं ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।44।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक घोर पराक्रम ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**अघोर ब्रह्मचर्य धारी मुनिवर, गुप्ति समिति व्रत पाल रहे ।**
**ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर, दुर्भिक्षादिक टाल रहे ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।45।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**बल ऋद्धी के तीन भेद हैं, ऋषियों ने जो गाए हैं ।**
**दोय घड़ी में सब श्रुत चिन्तें, मनबल ऋद्धी पाए हैं ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।46।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मनोबल ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**हीन कंठ अरु श्रम नहिं होवे, सब श्रुत को मुनि उच्चारें ।**
**यही वचन बल की शक्ती है, तप बल से मुनिवर धारें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।47।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक वचनबल ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**ऋषिवर पाएँ काय बल ऋद्धी, कायोत्सर्ग को मुनि धारें ।**
**त्रिभुवन उठा सके हाथों में, खेद करे न वे हारें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।48।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक कायबल ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**भेद आठ औषधि ऋद्धी के, आमर्षौषधि प्रथम गाई।**
**मुनि स्पर्श किए ही तन में, रोग रहे न गम भाई।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।49।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आमर्षौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





**लार थूक नख आदिक जिनका, हरे और की व्याधी ।**
**खेल्लौषधि ऋद्धीधर मुनिवर, धारण करें समाधी ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।50।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक खेल्लौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जल्ल स्वेद अरु रज से बनता, हरे और की व्याधि ।**
**जल्लौषधि ऋद्धीधर मुनिवर, धारण करें समाधि ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।51।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक जल्लौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**जिसके जिह्वा कर्ण आदि मल, हरे और की व्याधि ।**
**मल्लौषधि के धारी मुनिवर, धारण करें समाधि ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।52।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मल्लौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मल अरु मूत्र ऋषी के तन का, हरे और की व्याधी ।**
**विडौषधी धारी मुनिवर जी, धारण करें समाधी ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।53।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक विडौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**नीर वायु तन से स्पर्शित, हरे और की व्याधी ।**
**सर्वौषधि ऋद्धीधर मुनिवर, धारण करें समाधी ।।**

**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।54।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सर्वौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**कटु विष व्याप्त अन्य वच सुनकर, नर निर्विष हो जावें ।**
**मुख निर्विष ऋद्धीधर मुनिवर, मंगल वचन सुनावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।55।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक निर्विष ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रोग और विष आदिक जिनके, अवलोकन से जावें ।**
**दृष्टी निर्विष ऋद्धीधारी, के हम दर्शन पावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।56।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दृष्टिविषौषधि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रस ऋद्धी के छह भेदों में, आषीर्विष भी होवे ।**
**मरो वचन कहते मर जावें, मुनी वचन यह खोवें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।57।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक आषीर्विष ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दृष्टी विष ऋद्धी के धारी, ऐसी शक्ती पावें ।**
**मरें जीव दृष्टी पड़ते ही, दृष्टी नहीं दिखावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।58।।**





ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दृष्टिविष ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रूक्ष भोज अंजलि में आते, मिष्ठ क्षीरवत् होवे ।**
**क्षीरस्रावी ऋद्धीधर मुनिवर, जग की जड़ता खोवें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।59।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षीरस्रावि रस ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रूक्ष भोज अंजलि में आते, मीठा मधुवत् होवे ।**
**मधुस्रावी ऋद्धीधर मुनिवर, जग की जड़ता खोवें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।60।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक मधुस्रावि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**मुनिवर के वचनों से पल में, विष अमृत हो जावे ।**
**अमृतस्रावी ऋद्धीधर मुनि, मंगल वचन सुनावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।61।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अमृतस्रावि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रुक्ष भोज अंजलि में आतें, घृत सदृश हो जावे ।**
**घृतस्रावी ऋद्धीधर जग में, मंगल वचन सुनावें ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि–बलि जाएँ ।।62।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक घृतस्रावि रस ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**ऋद्धीधर अक्षीण महानस, जिस घर ले आहारा ।**
**जीमें कटक चक्रवर्ती का, अरू जीमें गृह सारा ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।63।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अक्षीणमहानस ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**चार धनुष चौकोर जमीं पे, रहे मुनी का आलय ।**
**रहें अंसख्य पशु नर नरपति, ऋद्धि अक्षीण महालय ।।**
**वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तप बल से ऋद्धी पाएँ ।**
**उनके गुण की प्राप्ती हेतू, चरणों में बलि-बलि जाएँ ।।64।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अक्षीणसंवास ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वर पूजित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## अष्ट प्रातिहार्य (शम्भू छंद)

**शोक निवारी तरु अशोक यह, प्रातिहार्य कहलाता है ।**
**रत्न जड़ित है डाल पात सब, मनहर पवन बहाता है ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।65।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक अषोक वृक्ष सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प वृष्टि सुरगण जब करते, शोभा होती अपरम्पार ।**
**चारों ओर फैलती सुरभित, अतिशय कारी गंध अपार ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।66।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दिव्य ध्वनि प्रहसित होती है, सब भाषामय चारों ओर ।**
**ॐकार मय होय देशना, करती सबको भाव विभोर ।।**





**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।67।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दिव्यध्वनि सत्प्रतिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**अक्षय कोष पुण्य से भरते, चौंसठ चँवर ढौरकर देव ।**
**प्रभु चरणों में देव समर्पित, तीन योग से रहें सदैव ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।68।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक धवलोज्वल चौंसठ चँवर सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**रत्नों से मण्डित होता है, श्री जिनेन्द्र का सिंहासन ।**
**उसके ऊपर अधर में होता, तीर्थंकर जिन का आसन ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।69।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक रत्नजड़ित सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भू मण्डल को मोहित करता, श्री जिन का आभा मण्डल ।**
**सप्त भवों का दिग्दर्शक है, श्री जिनेन्द्र का भामण्डल ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।70।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**देव दुन्दभि बजती मनहर, मन को आह्लादित करती ।**
**जड़ होकर भी भव्य जीव के, मन का सब कल्मष हरती ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।71।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक देवदुन्दभि सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तीन छत्र दर्शायक हैं यह, श्री जिन रहे त्रिलोकी नाथ ।**
**तीन लोक के अधिनायक के, झुका रहे सब चरणों माथ ।।**
**प्रातिहार्य को पाए श्री जिन, पद्म प्रभु जी कहलाए ।**
**गुण अनन्त के धारी जिनपद, वन्दन करने हम आए ।।72।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक क्षत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हुए एक सौ ग्यारह गणधर, चौंसठ ऋद्धी के धारी ।**
**मुख्य सुगणधर वज्र चमर थे, प्राणी मात्र के उपकारी ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।73।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक एक सौ ग्यारह गणधर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्वादश सहस मुनीश्वर राजे, केवल ज्ञान के अधिकारी ।**
**समवशरण में शोभा पाते, प्राणि मात्र के उपकारी ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।74।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक द्वादष सहस केवलज्ञानी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**तीन शतक द्वय सहस पूर्वधर, श्री जिनवर के चरण तले ।**
**समवशरण में शोभा पाते, शिव रमणी को वरण चले ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।75।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक तीन शतक सहस द्वय पूर्वधर मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





**छब्बिस सहस नव शतक मुनीश्वर, शिक्षक पद के अधिकारी ।**
**रत्नत्रय का पालन करते, प्राणी मात्र के उपकारी ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।76।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक छब्बीस सहस नव शतक मुनीश्वर शिक्षक सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दश हजार निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, अवधिज्ञान के अधिकारी ।**
**समवशरण में शोभा पाते, प्राणी मात्र के उपकारी ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।77।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दषहजार निर्ग्रन्थ अवधिज्ञानी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**सोलह सहस अष्ट शत मुनिवर, विक्रिया ऋद्धी के धारी ।**
**समवशरण में शोभा पाते, प्राणी मात्र के उपकारी ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।78।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सोलह सहस अष्टशत विक्रियाधारी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

**दश हजार त्रय शत् मुनिवर जी, श्री जिनवर के चरण तले ।**
**मनःपर्यय सुज्ञान के धारी, शिव रमणी को वरण चले ।।**
**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।79।।**

ॐ ह्रीं सर्व ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक दश हजार त्रय शत् मनःपर्ययज्ञानी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सहस छियानवे वादी मुनिवर, श्री जिनवर के चरण तले ।**
**समवशरण में शोभा पाते, षिव रमणी को वरण चले ।।**

**अतिशय वन्दित पद्मप्रभु को, अपने हृदय बिठाते हैं ।**
**चरण कमल में वन्दन करते, सादर शीश झुकाते हैं ।।80।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक सहस छियानवे हजार वादी मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चौंसठ ऋद्धी हैं विमल, प्रातिहार्य हैं साथ ।**
**अष्ट विधि मुनिराज को, विशद झुकाऊँ माथ ।।81।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक चौंसठ ऋद्धि, अष्ट प्रातिहार्य, अष्टविध मुनीश्वर सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)*

**जाप्य मंत्र–(1) ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।**

## जयमाला

दोहा– **पद्म प्रभ का पद्म रंग, पद्म चिन्ह पहिचान ।**
**पद्म प्रभु पद नमन् है, पाने पद निर्वाण ।।**
**पद्माकर सम पद्म प्रभु, पाये सुगुण विशाल ।**
**पद्म प्रभु के पद्म पद, की कहते जयमाल ।।**

***(राधेश्याम छंद)***

**हे वीतरागता धारी प्रभु, निर्ग्रंथ स्वरूप तुम्हारा है ।**
**सब क्रोध मान माया आदी अरु, मोह भी तुमसे हारा है ।।**
**तुमने जग वैभव को छोड़ा, शुभ भेष दिगम्बर धारा है ।**
**हम भूले भटके राही हैं, तुमको हे नाथ! पुकारा है ।।**
**तुम हो प्रभु नाथ अनाथों के, जग विधि के आप विधाता हैं।**
**प्रभु सत मारग दर्शायक हैं, अरु मोक्ष महल के दाता हैं।।**
**तुमने मन इन्द्रियों को जीता, हे नाथ ! जितेन्द्रिय कहलाए ।**
**हम मोह जाल मे फँसे प्रभु, छुटकारा पाने को आए ।।**





**दुखियों का दुख हरने वाला, पावन प्रभु दर्श तुम्हारा है ।**
**मन वांछित फल देने वाला, श्री पद्म नाम अति प्यारा है ।।**
**शुभ माघ कृष्ण षष्ठी कौशाम्बी, मात सुसीमा उर आए ।**
**नृप धारण को प्रभु धन्य किया, उसके घर में मंगल छाए ।।**
**कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को, प्रभु जन्म महोत्सव पाए हैं ।**
**सुर नर किन्नर मुनिवर गणधर, मिलकर के सब हर्षाए हैं ।।**
**प्रभु तीस लाख पूरब की आयु, पाकर जग को बोध दिया ।**
**जग में रहकर जग जीवों के, प्रभु ने मन को भी मोद किया ।।**
**जो नाथ आपको ध्याते हैं, दुख उनके पास न आते है ।**
**जो चरण शरण में आते हैं, उनके संकट कट जाते हैं ।।**
**शुभ निर्विकल्प चैतन्य रूप, आतम स्वरूप को पाए हो ।**
**हे भव्य ! तुम्हारा यही रूप, सारे जग को दर्षाए हो ।।**
**अपने समान जग जीवों को, मुक्ती की राह दिखाते हो ।**
**तुम सिद्ध शिला के अधिनायक, भव्यों को सिद्ध बनाते हो ।।**
**तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुम तीन लोक के ज्ञाता हो ।**
**तुम तीन वेद से रहित प्रभु, तीनों के आप विधाता हो ।।**
**प्रभु राग द्वेष से दूर रहे, मोहादि तुम्हें न छू पावें ।**
**अतएव सुरेन्द्र नरेन्द्र सभी, शुभ भाव सहित प्रभु गुण गावें ।।**
**तुम विशद गुणों के धारी हो, हम विशद गुणों को पा जावें ।**
**हम भाव बनाकर आये हैं, प्रभु भव–भव में भक्ती पावें ।।**
**कह रहे भक्ति के वशीभूत, मेरी भक्ती स्वीकार करो ।**
**तुम पार हुए भव सागर से, अब मेरा भी उद्धार करो ।।**
**जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है ।**
**अपनी इच्छाएँ पूरण कर, मनवाँछित फल को पाता है ।।**
**जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है ।**
**पूजा की पुण्य निधी पावन, भक्तों के दुख हर लेती है ।।**
**यह वीतराग का मार्ग शुभम्, सीधा शिवपुर को जाता है ।**
**जो बढ़े भाव से इस पथ पर, वह परम मोक्ष पद पाता है ।।**

**यह दास आपके चरणों में, अनुगामी बनकर आया है ।**
**उस सिद्ध शुद्ध पद पाने का, हमने भी लक्ष्य बनाया है ।।**

छन्द : घत्तानन्दः

**जय पद्म जिनन्दा, आनन्द कन्दा, पाप निकन्दा ज्ञानपति ।**
**जय कर्म हनन्ता, सौख्य अनन्ता, ध्यावत सन्ता सिद्धपति ।।**

ॐ ह्रीं श्री सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चरण शरण के दास की, भक्ति फले अविराम।**
**पद्म प्रभु के पद् युगल, करते 'विशद' प्रणाम।।**

*इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)*

## आरती पद्मप्रभ की

**श्री पद्मप्रभु जिनराज, आज थारी आरती उतारूँ ।**
**आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ ।।**
**प्रभु करो मेरा उद्धार, आज थारी.....**
**मात सुसीमा के सुत प्यारे, धरणराज के राज दुलारे ।**
**जन्मे कौशाम्बी ग्राम, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....**
**प्रभुजी भेष दिगम्बर धारे, वस्त्राभूषण आप उतारे ।**
**कीन्हा है आतम ध्यान, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....**
**तुमने कर्म घातिया नाशे, आत्म ध्यान से ज्ञान प्रकाशे।**
**करते जग कल्याण, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....**
**जग–मग दीपक हाथ में लाते, प्रभु चरणों में शीश झुकाते**
**तुम हो कृपा निधान, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....**
**प्रभु तुम तीन लोक के स्वामी, ज्ञाता दृष्टा अन्तर्यामी।**
**'विशद' ज्ञान के नाथ, आज थारी आरती उतारूँ ।। श्री पद्मप्रभु....**
**बाड़ा पदमपुरा शुभ जानो, मूला जाट वहाँ पे मानो।**
**प्रगटे उसके हाथ, आज थारी आरती उताऊँ।। श्री पद्मप्रभु....**





# प्रशस्ति

**दोहा– लोकालोक के मध्य में, जम्बूद्वीप महान् ।**
**भरत क्षेत्र दक्षिण रहा, आर्य खंड शुभमान।।1।।**
**पुण्य पुरुष जिसमें हुए, भारत देश महान् ।**
**एक प्रांत जिसका रहा, नाम है राजस्थान ।।2।।**
**बिन मात्रा का शहर है, अलवर जिसका नाम ।**
**क्षेत्र तिजारा का जिला, ऋषियों का है धाम ।।3।।**
**दो हजार सन् छह रहा, करके चातुर्मास ।**
**जैन भवन स्कीम दश, पार्श्व नाथ हैं पास ।।4।।**
**नगर बीच मंदिर बड़ा, पद्म प्रभु भगवान ।**
**गंध कुटी पर राजते, शोभा रही महान् ।।5।।**
**यह मंदिर उसके तले, कहते ऐसा लोग ।**
**पद्म प्रभ के दर्ष कर, बना एक संयोग ।।6।।**
**भक्ती कीन्ही भाव से, बन गया एक विधान ।**
**लोग सभी पूजा करें, पुण्य का होय निधान ।।7।।**
**विक्रम सम्वत् सहस दो, अरू तिरेसठ की साल ।**
**वीर निर्वाण पच्चीस सौ, बत्तिस रहा विशाल ।।8।।**
**कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, धन तेरस की शाम ।**
**पूर्ण हुआ शुभ कार्य यह, लिया विशद विश्राम ।।9।।**
**ऋद्धि सिद्धि दायक लिखा, पद्म प्रभू विधान ।**
**भूल चूक को भूलकर, पूज रचो धीमान् ।।10।।**
**कवि नहीं पण्डित नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य ।**
**धर्म सहित शुभ आचरण, करो सभी जन आर्य ।।11।।**

*।। इति ।।*

# भजन

*(तर्ज – मधुवन के मंदिरों में...)*

बाड़े में पद्म प्रभु जी, अतिशय दिखा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।। टेक।।
मूला था जाट भोला, सपना उसे दिखाया।
सौभाग्य खोदने का, मूला ने श्रेष्ठ पाया।।
हम पुण्य के सुफल से, दर्शन जो पा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।1।।
भक्ती से भक्त आके, प्रभु को पुकारते हैं।
मुद्रा प्रभू की अनुपम, इकटक निहारते हैं।।
आकर के शरण श्रावक, गुणगान गा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।2।।
आते हैं दुखी प्राणी, दुखड़ा यहाँ सुनाते।
कर अर्चना प्रभू की, पीड़ा सभी मिटाते।।
कई भूत-प्रेत आकर, पूजन रचा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।3।।
दरबार में प्रभू के, जाते हैं रोते-रोते।
आशीष प्राप्त करके, आते हैं हँसते-हँसते।।
चरणों में भक्त आकर, पूजा रचा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।4।।
है सर्व ऋद्धि-सिद्धि, दायक विधान पूजा।
इसके सिवा न कोई, है मंत्र और दूजा।।
यह कृति 'विशद' है अनुपम, पद में चढ़ा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।5।।
बाड़े में पद्म प्रभु जी, अतिशय दिखा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।। टेक।।





# मुक्तक

बिना माँगे ही यहाँ पर, भरपूर मिलता है।
आशाओं से अधिक जी, हजूर मिलता है।।
दुनियाँ में और कहीं मिले न मिले बन्धु।
पर बाड़े वाले बाबा के दर पर जरूर मिलता है।।1।।
यह आपका ही तीर्थ है, यहाँ निशंक होकर आइये।
बसन्ति की बयार सा मौसम है, खुश होके मुस्कराइये।।
यदि जीवन को खुशहाल बनाना चाहते हो विशद।
तो पद्म प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जाइये।।2।।
अटल तकदीर में मेरे, श्री अरिहंत लिखा है।
जुबाँ पर देख लो मेरे, जय जिनेन्द्र लिखा है।।
आँखों में देख लो मेरे, गुरु का नाम लिखा है।
हृदय को चीरकर देख लो, श्री पद्मप्रभु लिखा है।।3।।
अपनी जिन्दगी में, एक काम करके देखो।
सच्चे मन से प्रभु चरणों में, शीश झुकाकर देखो।।
अवश्य ही सौभाग्य का, सितारा चमक जाएगा आपका।
अपनी जिन्दगी श्री पद्मप्रभु, के नाम करके देखो।।4।।
बाड़े वाले बाबा का नाम, मेरे हृदय में समाया है।
अपनी श्वांसों में पद्मप्रभु को, मैंने बसाया है।।
सोते जागते हर क्षण, प्रभु का ही नाम रटते हैं।
हमने जो पाया वह सब, प्रभु कृपा से पाया है।।5।।
बाड़े वाले बाबा के, सदा हम गीत गाऐंगे।
पद्मप्रभु का दर्श करने को, हर माह हम भी जाऐंगे।।
इन्होंने कर दिखाया वह, नहीं जो कोई कर सकता।
शरण को प्राप्त करके हम, चरण माथा झुकाऐंगे।।6।।
जो इन्सान चारों धाम के भी दर्शन कर आया।
जिसने सभी तीर्थों पर पूजा और विधान रचाया।।
फिर भी उसकी तीर्थ यात्रा अधूरी है, पद्म प्रभु के दर्शन बिन।
जो अतिशय क्षेत्र पदमपुरा नहीं पहुँच पाया।।7।।

संकलन - मुनि विशालसागर